



© NCERT not to be republished

21057



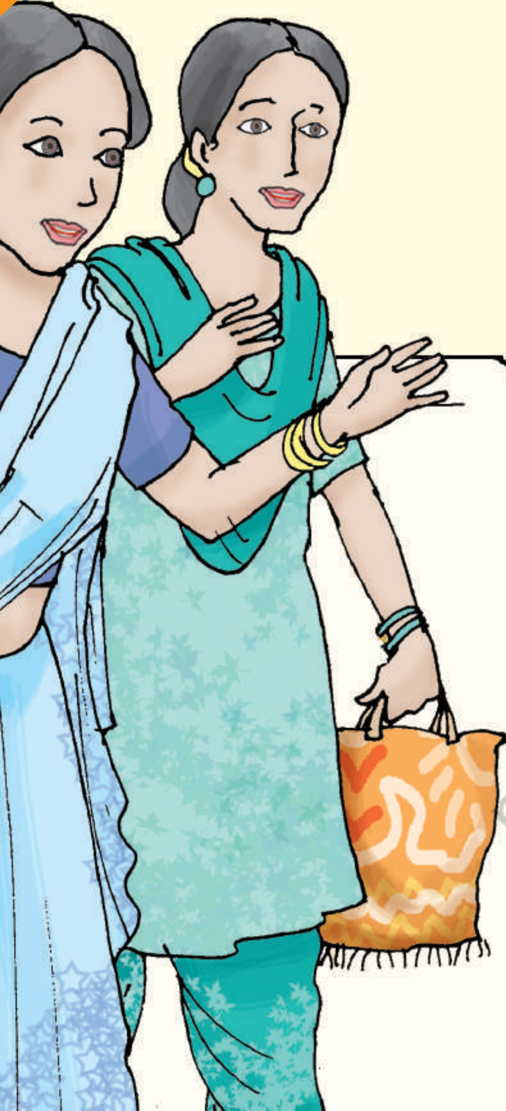
₹ 15.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)
978-93-5007-375-9

मादृशी









© NCERT
not to be republished

प्रथम संस्कृत संस्करण : अगस्त 2015 श्रावण 1937

पुनर्मुद्रण : जून 2019 ज्येष्ठ 1941, जुलाई 2020 श्रावण 1942

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2015

PD 153T RPS

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे (स्वर्गीय), स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

संपादक (संस्कृत) – कृष्णचन्द्र त्रिपाठी

संस्कृत अनुवाद – रणजित बेहेरा, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

चित्रांकन: जोएल गिल **सज्जा तथा आवरण–** निधि वाधवा

संस्कृत समीक्षा समिति

यज्ञ दत्त शर्मा, सेवानिवृत *प्रोफ़ेसर संस्कृत*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर संस्कृत*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली; राजेश्वर प्रसाद मिश्र, *प्रोफ़ेसर संस्कृत*, संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा; भागीरथी नन्द, *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, साहित्य विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारिया सराय, नई दिल्ली; पतञ्जलि कुमार भाटिया, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; सूर्य नारायण नन्द, *अतिथि अध्यापक*, सेंट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; हरेकृष्ण अगस्ति, *असिस्टैंट प्रोफ़ेसर*, व्याकरण विभाग, कवि कुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र; सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी. संस्कृत*, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड; निर्मल मिश्र, *टी.जी.टी. संस्कृत*, केन्द्रीय विद्यालय, नरेला, दिल्ली; डॉ. जतीन्द्र मोहन मिश्र, *सह आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

आभार ज्ञापन

प्रो. बी.के.त्रिपाठी, *निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; कृष्ण कुमार, *पूर्व-निदेशक*, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; वसुधा कामथ, *पूर्व-संयुक्त-निदेशक*, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली; उमा शंकर शर्मा ऋषि, *पूर्व विभागाध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार; के. के. वशिष्ठ, *पूर्व-विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा मोडेस्ट प्रिंट प्रा. लि. सी-52 डी.डी.ए., शेड्स ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-93-5007-353-7 (वर्षा-सैट)
978-93-5007-375-9

वर्षा-क्रमिक-पुस्तकमाला प्राथमिककक्षाया: बालानां कृते वर्तते। अस्या: अभिप्राय: – 'बोधनेन सह' स्वयंपठनस्य अवसरपरिकल्पनं वर्तते। अस्या: पुस्तकमालाया: कथा: चतुर्षु स्तरेषु पञ्चसु कथावस्तुषु च विभक्ता: सन्ति। 'वर्षा' बालानाम् सानन्दं पठने स्थायिपाठकत्वेन निर्माणे च सहायिका भविष्यति। बालेभ्य: दैनन्दिन्य: लघुलघुघटना: कथा इव रुचिकरा: प्रतीयन्ते। अत: वर्षा-मालिकाया: सर्वा: कथा: दैनिकजीवनस्य अनुभवान् आधृत्य वर्तन्ते। लघुबालानां पठनाय प्रचुरमात्रायां पुस्तकानि उपलब्धानि स्युरिति अस्या: पुस्तकमालाया: अपरमुद्देश्यं वर्तते।

वर्षा-पुस्तकमाला बालानां पठन-शिक्षणे, स्थायिपाठकनिर्माणे, सूचनासंग्रहणे पाठ्यचर्याया: प्रत्येकं क्षेत्रे च सहायिका भविष्यति। शिक्षका: वर्षा-मालिकां कक्षायाम् तथा स्थापयेयु: येन बाला: सुखेन पुस्तकानि ग्रहीतुं शक्नुयु:।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 **फोन** : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बंगलूरु 560 085 **फोन** : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 **फोन** : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 **फोन** : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 **फोन** : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *विपिन दिवान*

© NCERT not to be republished

मादृशी


पितृस्वसा


दीपा


रानी


माता

© NCERT not to be republished



एकदा रान्याः पितृस्वसा तस्याः गृहम् आगता।
पितृस्वसा स्वशिशुकन्याम् अपि आनयत्।
तस्याः कन्यायाः नाम दीपा आसीत्।

© NCERT not to be republished



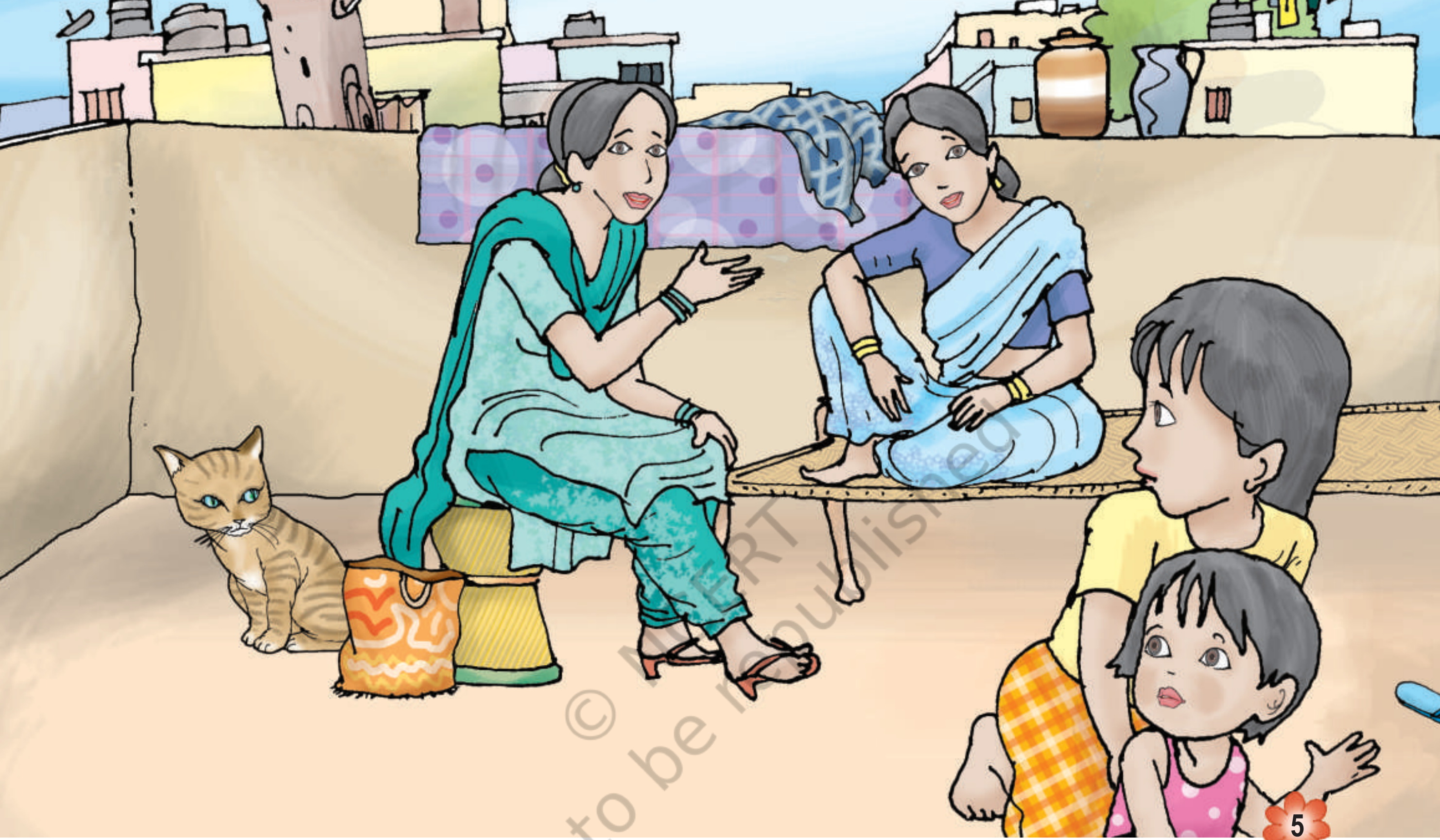
रानी दीपाम् अङ्के गृहीतवती।
रानी दीपां खेलयितुम् आरब्धवती।
दीपा केवलम् एकवर्षीया आसीत्।

© NCERT not to be republished



रमा अपि तत्र आगता।
सा अपि रान्या सह खेलितुम् आरभत।
रमा रानी च दीपां खेलितवत्यौ।

© NCERT not to be republished


© NCERT not to be republished

पितृस्वसा अवदत् यत् दीपा रानी इव दृश्यते।
माता अपि अकथयत्– "दीपा रानी इव दृश्यते।"
रानी दीपां ध्यानेन दृष्टवती।



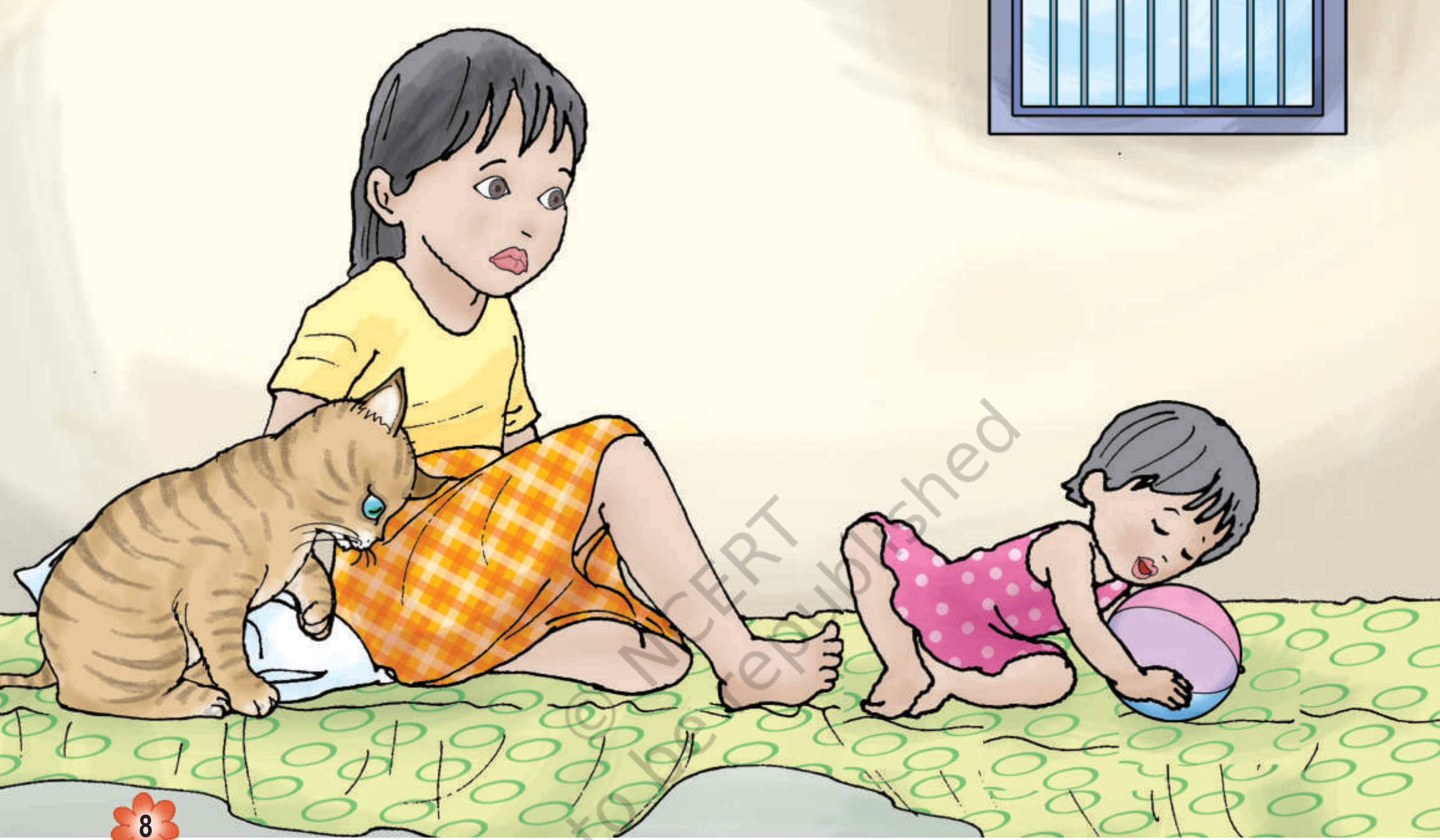
© NCERT not to be republished

रानी दीपां शय्यायाम् उपावेशयत्।
सा दीपायाः बाहुना स्वबाहुम् अमेलयत्।
दीपायाः बाहुः कृशः, स्वीयः बाहुः स्थूलः इति सा अमन्यत।



© NCERT not to be republished

रानी दीपायाः मुखम् उद्घाटितवती।
सा दीपायाः दन्तान् अन्वेष्टुम् आरभत।
दीपायाः मुखे चत्वारः दन्ताः आसन् किन्तु रान्याः अधिकाः आसन्।



© NCERT not to be republished

रानी स्वपादं दीपायाः पादेन अमेलयत्।
दीपायाः पादौ लघू आस्ताम् रान्याः दीर्घौ आस्ताम्।
दीपायाः पादौ कृशौ आस्ताम्, रान्याः तु स्थूलौ।



© NCERT not to be republished

रानी स्वाङ्गुल्य: दीपाया: अङ्गुलीभि: अमेलयत्।
दीपाया: अंगुल्य: ह्रस्वा: किन्तु रान्या: दीर्घा:।
दीपाया: अंगुल्य: कृशा:, रान्या: स्थूला: आसन् ।



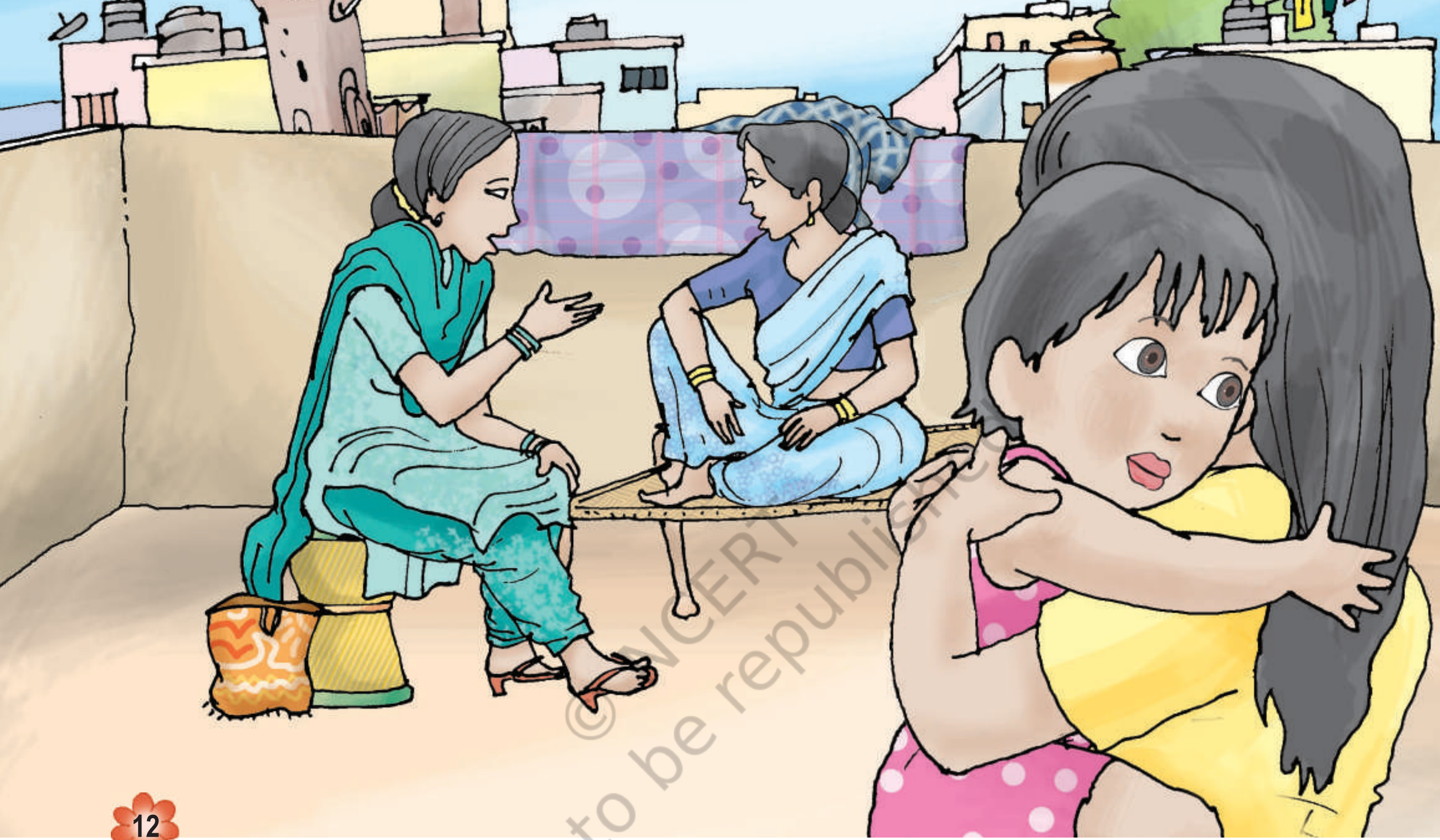
रानी स्व-नखान् दीपाया: नखै: अमेलयत्।
दीपाया: नखा: कोमला: पाटलवर्णा: च आसन्।
रान्या: नखा: कठोरा: ईषत्पाटलवर्णा: च आसन्।

© NCERT not to be republished



© NCERT not to be republished

रानी स्व-नासिकां दीपाया: नासिकया अमेलयत्।
रानी स्व-नासिकां स्पृशन्ती पश्यति स्म।
सा नासिके मेलयित्वा द्रष्टुं समर्था न आसीत्।



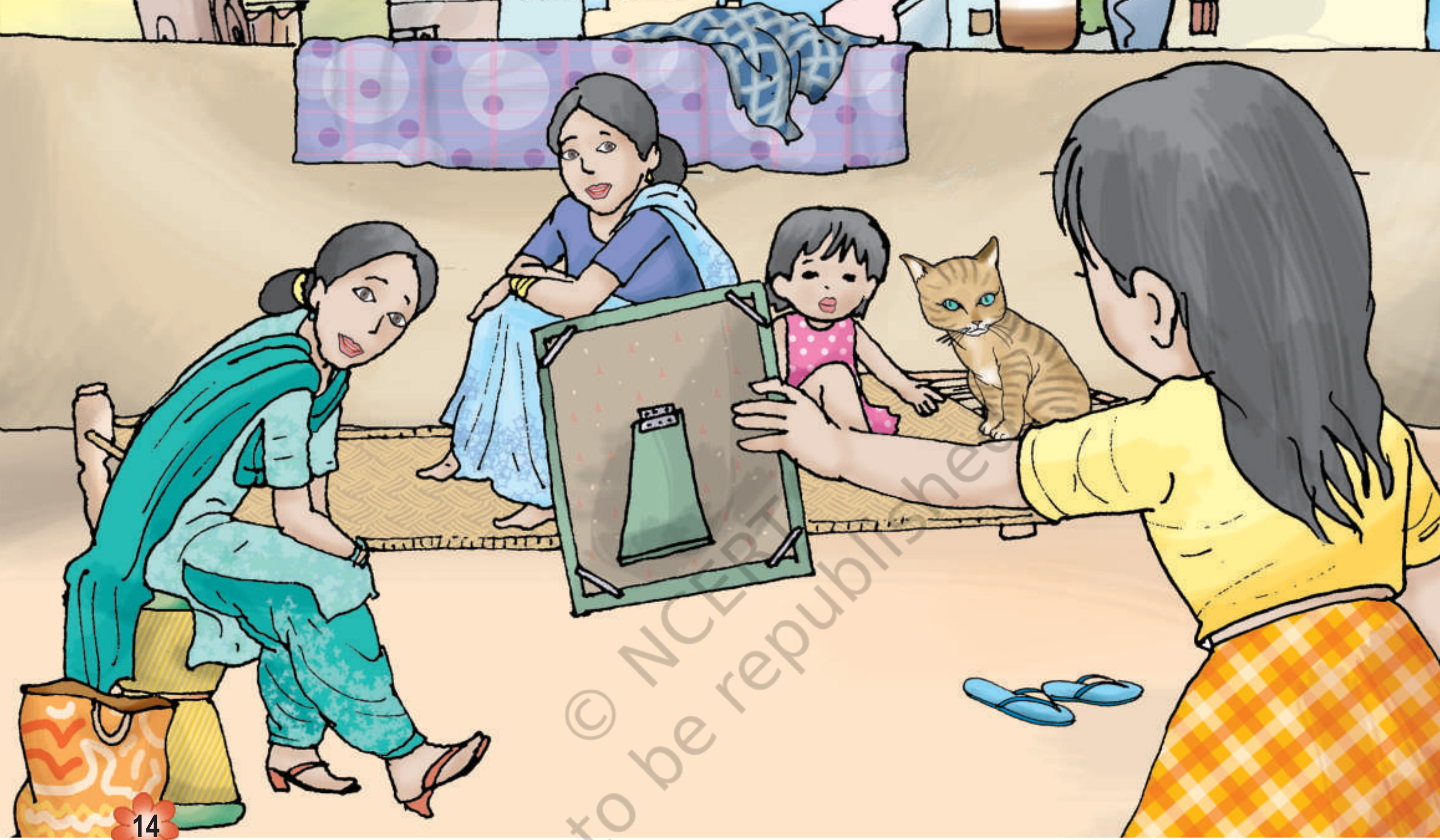
रानी दीपाम् अङ्के गृहीतवती।
सा तां नीत्वा पितृस्वसुः समीपे अगच्छत्।
तत्र रान्याः माता अपि आसीत्।

© NCERT not to be republished



© NCERT not to be republished

रानी पितृस्वसारम् अवदत् – "दीपा मादृशी नास्ति।"
रानी दीपां स्व-सदृशीं न अमन्यत।
सा अवदत्- "दीपा मादृशी नास्ति।"



© NCERT not to be republished

माता दर्पणम् आनेतुं रानीम् अकथयत्।
रानी दर्पणम् आनेतुम् अन्तः गतवती।
सा हरितप्रान्तं दर्पणम् आनीय प्रत्यागता।



© NCERT not to be republished

माता दर्पणम् द्रष्टुं रानीम् अवदत्।
सा दीपाम् अपि दर्पणस्य पुरतः स्थापितवती।
रानी स्व-मुखं दीपायाः च मुखं अपश्यत्।



रानी ध्यानेन दर्पणे अपश्यत्।
इदानीं सा दीपां स्व-सदृशीं दृष्टवती।
सा शिरः चालयित्वा अवदत्- "दीपा मादृशी इति।"

© NCERT not to be republished

रमा-रान्योः अपराः कथाः















© NCERT not to be republished

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।